हिंदी उपन्यास साहित्य में कश्मीर समस्या

हिंदी में पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध प्रस्ताव

शोध निर्देशक

डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन

शोधार्थी

अरिदमन सिंह

JVR-II/22/11045

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

1. प्रस्तावित शोध विषय का संक्षिप्त परिचय :-

(क) कश्मीर : एक परिचय :-

इतिहास काल से ही कश्मीर कला-संस्कृति और वैभवपूर्ण राज्य रहा है ; लेकिन यहाँ की परिस्थितियों ने इन्हें बहुत प्रभावित किया हैं | इतिहास काल से ही यहाँ की परिस्थितयों बदलती रही हैं | जम्मू और कश्मीर के कल्हण की राजतरंगिनी तथा नीलम पुराण नामक दो प्रमाणिक ग्रंथो में यह आख्यान मिलता है कि कश्मीर की घाटीकभी बहुत बड़ी झील हुआ करती थी | इस कथा के अनुसार कश्यप ऋषि ने यहाँ से पानी निकाला और इसे मनोरम प्रकृतिक स्थल में बदल दिया किन्तु भूगर्भशास्त्रियो का मानना है कि भूगर्भीय परिवर्तनों के कारण खदिनयार , बारामुला में पहाड़ो के धसने से झील का पानी बाहर निकल गया और इस तरह पृथ्वी पर स्वर्ग कहलाने वाली कश्मीर घाटी अस्तित्व में आयी | ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सम्राट अशोक ने कश्मीर में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया तथा बाद में कनिष्क ने इसकी जड़े और गहरी की । छठी शताब्दी के आरंभ में कश्मीर पर हूणों का अधिकार हो गया। कुछ समय पश्चात कश्मीर पर उज्जैन साम्राज्य का नियंत्रण हो गया । विक्रमादित्य राजवंश के पतन के पश्चात कश्मीर पर स्थानीय शासन राज करने लगे। वहां हिंदू और बौद्ध संस्कृतियों का मिश्रित रूप विकसित हुआ।

कश्मीर की मूल निवासी सारे हिंदू थे। कश्मीरी पंडितों की संस्कृति लगभग 500 वर्ष पुरानी है और वह कश्मीर के मूल निवासी हैं ।इसलिए अगर कोई कहता है कि भारत ने कश्मीर पर कब्जा कर लिया है तो यह बिल्कुल गलत है। 14 वीं शताब्दी में तुर्किस्तान से आए एक क्रूर आतंकी मंगोल सेनापति दुलूचा नें लगभग 60 हजार लोगों की सेना के साथ कश्मीर पर आक्रमण किया और कश्मीर में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना की। दुलुचा नें नगरों और गांव को नष्ट कर दिया और हजारों हिंदुओं का नरसंहार किया। बहुत सारे हिंदुओं को जबरदस्ती मुस्लिम बनाया गया। बहुत सारे हिंदुओं जिन्होंने इस्लाम को कबूल नहीं किया, उन्होंने आत्महत्या कर ली और बचे हुए भाग गए या उनका कत्ल कर दिया गया या इस्लाम धर्म कबूल करवा लिया गया। आज जो भी कश्मीरी मुस्लिम है उन सभी के पूर्वजों को इन अत्याचारों के कारण जबरदस्ती मुस्लिम बनाया गया था। सभी कश्मीरी पंडितों के घर के दरवाजे पर नोट लगा दिए गए जिसमें लिखा था कि या तो मुस्लिम बन जाओ या कश्मीर छोड़कर भाग जाओ अन्यथा मरने को तैयार हो जाओ । सभी कश्मीरी मस्जिदों में एक टेप चलाया गया कि हिंदुओं को कश्मीर से बाहर निकालो। उसके बाद कश्मीरी मुस्लिम सड़कों पर उतर आए और कश्मीरी पंडितों के घर जला दिए। कश्मीरी पंडितों की महिलाओं का बलात्कार करके, हत्या कर नग्न शरीर को पेड़ पर लटका दिया गया और कुछ को गर्म सलाखों से मार दिया गया। कश्मीरी पंडितों की हत्या करते हुए नारा लगाते रहे कि हमें भारत से आजादी चाहिए।

कश्मीर में इस्लाम का आगमन 13वीं-14वीं शताब्दी में हुआ। मुस्लिम शासको में जैन-उल-आबदीन (1420-70) सबसे प्रसिद्ध शासक हुए, जो कश्मीर की सत्ता में उस समय आए, जब तातरों

के हमले के बाद हिंदू राजा देव सिंह भाग गए। कश्मीर के सम्पूर्ण इतिहास में जैन-उल-आबदीन का शासन काल स्वर्णिम काल के रूप में जाना जाता है | जैन-उल-आबदीन के शासन काल में कश्मीर ने धर्म, कला, आध्यात्म आदि सभी क्षेत्रो में अपनी अलग पहचान एवं संस्कृति की स्थापना हुई, इसी मिश्रित संस्कृति को कश्मीरियत कहा जाता है | बाद में शक शासकों ने जैन-उल-आबदीन के पुत्र हैदरशाह की सेना को खदेड़ दिया और सन् 1586 तक कश्मीर पर शासन किया। सन् 1586 में अकबर ने कश्मीर को जीत लिया। सन् 1752 में कश्मीर तत्कालीन कमजोर शासक के हाथ से निकलकर अफगानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली के हाथ में चला गया। 67 सालों तक पठानों ने कश्मीर घाटी पर शासन किया।अब्दाली के द्वारा नियुक्त किए गए सूबेदारों ने कश्मीर को जमकर लूटा। अंतिम अफगान सूबेदार जब्बर खान ने हिंदुओं पर अमानवीय अत्याचार किए ।निर्ममता एवं घृणा के इस दौर में जब स्थिति असहनीय हो गई तो एक कश्मीरी पंडित बीरबल धर महाराजा रणजीत सिंह के पास सहायता के लिए पहुंचा। इस प्रकार 1819 ईस्वी में कश्मीर में सिख साम्राज्य की स्थापना हुई। देखा जाए तो कश्मीर में सिख शासन अफगानी शासन का विस्तार भरा था। बहुत अधिक कर वृद्धि, आम जनता के साथ धार्मिक भेदभाव एवं आरोग्य सूबेदारों ने कश्मीर में सब कुछ तहस-नहस कर दिया।

रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद पंजाब के साथ-साथ कश्मीर में भी अराजकता व्याप्त हो गई। ऐसी स्थिति में डोगरा शासक महाराजा गुलाब सिंह ने जो लगातार अपने स्वतंत्र सत्ता के लिए प्रयासरत था, ने इस अवसर का लाभ उठाया। इस प्रकार अंग्रेजों के साथ मिलकर 1846 ईस्वी में कश्मीर पर डोगरा राजवंश की स्थापना हुई और एक बार पुनः हिंदू शासन व्यवस्था लागू हो गई। अशोक कुमार पांडेय कश्मीर में डोगरा शासन की स्थापना के विषय में लिखते हैं कि " सन 1846 ई के अंत में गुलाब सिंह डोगरा जिस जम्मू कश्मीर राज्य के स्वतन्त्र शासक बने थें, वह अपने आकार में ब्रिटेन से बड़ा था और विविधता में शायद भारतीय उपमहाद्वीप के किसी भी अन्य तत्कालीन राज्य से अधिक विविध। एक तरफ हिंदू बहुल जम्मू था तो दूसरी तरफ मुस्लिम बहुल कश्मीर था, तो साथ में लेह के तिब्बती लोग थे, गिलगित-बाल्टिस्तान था और दारद भी। सीख भी, राजपूत भी थे।

इस प्रकार कश्मीर इन सभी क्षेत्रों से मिलकर अब केवल कश्मीर घाटी न रहकर जम्मू, लद्दाख एवं कारगिल के रूप में वर्तमान स्वरूप; जम्मू एवं कश्मीर राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और इसी रूप में सन् 1947 ई तक, जब तक इसका विभाजन नहीं हुआ रहा। कश्मीर के इतिहास को देखने के पश्चात कहा जा सकता है कि कश्मीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में एक और जहां कश्मीर की साझा सांस्कृतिक विरासत समाहित है तो वहीं दूसरी ओर हिंसा, लूटमार एवं रक्तरंजित इतिहास भी छिपा हुआ है।

(ख) कश्मीर : वर्तमान स्वरूप :-

कश्मीर भारतीय उपमहाद्वीप का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके उत्तर में चीन, पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में हिमाचल प्रदेश व पंजाब, उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान व पश्चिम में पाकिस्तान स्थित

है। जम्मू कश्मीर राज्य की स्थापना 26 अक्टूबर सन् 1947 ई. को हुई थी। 1947-48 ईस्वी में पाकिस्तानी सेना एवं कबायलियों ने मिलकर जम्मू एवं कश्मीर पर आक्रमण करके उसके एक हिस्से पर अपना अधिकार कर लिया। इस कारण कश्मीर का कुछ भाग अभी तक पाकिस्तान के अवैध कब्जे में हैं, जिसे वे लोग आजाद कश्मीर कहते हैं। इस प्रकार कश्मीर के अलग-अलग क्षेत्रों पर भारत एवं पाकिस्तान का आधिपत्य है।

सामाजिक-सांस्कृतिक और प्रशासनिक दृष्टि से जम्मू कश्मीर के तीन प्रमुख संभाग हैं - जम्मू, कश्मीर घाटी और लद्दाख। शुद्ध भौगोलिक दृष्टि से सूबे को चार क्षेत्रों में बांटा जाता है - काड़ी क्षेत्र, शिवालिक श्रृंखला, कश्मीर घाटी एवं पीर पंजाल श्रृंखला और लद्दाख। कश्मीर नदियों, पहाड़ों, घाटियों, झीलों और झरनों का इलाका हैं। अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ही इसे 'पृथ्वी का स्वर्ग' कहा जाता है। चारों तरफ हिमाच्छादित उत्तुंग शिखरों से घिरी झेलम की सुंदर घाटी कश्मीर की आत्मा है। राजधानी श्रीनगर एक प्राचीन और प्रख्यात नगर हैं, जिसके बीच में झेलम बहती हैं।

जम्मू एवं कश्मीर राज्य को मुख्यतः तीन स्पष्ट क्षेत्र में बांटा जा सकता है-

1. जम्मू का समतल क्षेत्र
2. कश्मीर घाटी
3. लद्दाख का पहाड़ी क्षेत्र

इस प्रकार जम्मू क्षेत्र हिंदू बहुल, कश्मीर की घाटी मुस्लिम बहुल एवं लद्दाख का पहाड़ी क्षेत्र बौद्ध धर्म के अनुयायियों का क्षेत्र है। इस संपूर्ण क्षेत्र का नाम जम्मू एवं कश्मीर है। जिसमें उर्दू, कश्मीरी, डोगरी, लद्दाख की भाषाएं बोली जाती है। अपने अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य, चीड़ देवदार के घने जंगलों, नदियों, झरनों, ऊंची हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं, दुर्गम दरों और अपनी बहुरंगी संस्कृति के लिए जम्मू को 'मिनी कश्मीर' और लद्दाख संभाग को 'दुनिया की छत' कहा जाता है।

जम्मू कश्मीर राज्य के पुनर्गठन के बाद जम्मू कश्मीर व लद्दाख का वर्तमान स्वरूप निम्न है-

1. केंद्रशासित प्रदेश : जम्मू-कश्मीर
2. केंद्रशासित प्रदेश : लद्दाख

यह पुनर्गठन 31 अक्टूबर 2019 को हुआ पुनर्गठित जम्मू कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश में जिलों की संख्या 22 हैं तथा लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश में जिलों की संख्या 2 है।

(ग) कश्मीर समस्या का उदय :-

कश्मीर समस्या का उदय 1947 ई. के पाकिस्तानी सेना तथा कबायलियों के द्वारा किए गए आक्रमण के साथ देखा जा सकता है। इसके पीछे कई कारण रहे हैं यथा -

1. सामरिक महत्त्व का राज्य होने के कारण सभी पड़ोसी देशों की नजर कश्मीर पर रही।

2. प्राचीन सांस्कृतिक विरासत होने के कारण।

3. प्राकृतिक सौंदर्य के कारण।

4. राजनीतिक कारण।

5. धार्मिक व सांप्रदायिक कारण।

उक्त सभी कारणों की वजह से कश्मीर में अराजकता, लूटपाट, विस्थापन, भय वातावरण व्याप्त रहा। निष्कासन की नियति भोगते लोगों की सबसे बड़ी पीड़ा जो कभी उन्माद की हदें छूने लगती हैं, आतंकवाद से उपजी पीड़ा हैं , उनका छूटा हुआ घर संसार है, जिससे आतंकवादियों ने उन्हें काफिर घोषित कर उनसे छीन लिया। उन्हें डरा- धमकाकर, बहन-बेटियों की इज्जत लूटकर, युवा बेटों को मार-काटकर घर से बेदखल कर दिया । वे रोजगार की तलाश में घर इसलिए छोड़कर आए थे की मन होने पर कभी भी अपनों की स्मृति विरासतों में पुनः लौट सके। घर मात्र जमीन का टुकड़ा ईंट-सीमेंट का ढांचा भर होता तो कभी भी कहीं पर भी बनाया जा सकता था परंतु घर के साथ जो उनकी पहचान स्मृतियों की भरी पूरी जमीन और अस्मिता के प्रसंग जुड़े हैं । घर छूटने का सही अर्थ साकी के शब्दों में " वही जानता है कि जिसने अपना घर खो दिया है।" अपने ही देश में शरणार्थी होकर अजनबियों-सा जीवन जीना उन्हें अच्छा नहीं लगता लेकिन उनकी मजबूरी हुई। कश्मीरी का वैभवपूर्ण और सांस्कृतिक संपन्नता का इतिहास रहा है। भारत की श्रेष्ठतम बौद्धिक परंपराओं को कश्मीर के विद्वानों ने पैदा किया। भारत का मान-सम्मान सारी दुनिया में बढ़ाया । कश्मीरी पंडित भारत के सुंदर, मधुरभाषी, ज्ञानी लोग रहे हैं। ये लोग हिंसा से कोसों दूर थे। कश्मीरियत की पहचान के आदर्श मानक भी, उनका विस्थापन कश्मीरियत का अंत है । यह लेट कैपिटिलिज्म की बड़ी त्रासदपूर्ण घटनाओं में से एक घटना है। कश्मीर विस्थापितों की समस्या हिंदू समस्या नहीं है बल्कि यह सांप्रदायिक आतंकवाद की राष्ट्रीय समस्या है।

लोकतंत्र के इस गरिमामय काल में कश्मीर में आज यह आतंक और सांप्रदायिक उन्माद का कठिन दौर है। कश्मीरी पंडितों और कुछ उदारवादी मुसलमान अपनी जन्मभूमि, अपने पुरखों की विरासत से वंचित होने को अभिशप्त हो गए। कारण भले ही भिन्न हो पर व्यथा- कथा वही है मानवीय यातना और अधिकार हनन की त्रासदपूर्ण कथा। यह समय अपनी तमाम विडम्बनाओं और विसंगतियों के साथ आज हर चिंतक, बुद्धिजीवी और जनहित के लिए प्रतिबद्ध रचनाकार के लिए उद्वेलन और चुनौतियां लेकर आया और विस्थापन की त्रासदियों के बीच टूटतें भ्रमों और ढहतें विश्वासों को कंधा देते उपन्यासकारों ने आज तक विस्थापितों के स्वप्नों और उनकी स्मृतियों को व्यवस्था के रूबरू रखकर स्थितियों के प्रभावों एवं अपने तीखे अनुभवों को साहित्य में दर्ज किया है।

(घ) हिंदी उपन्यासों में कश्मीर समस्या :-

प्रसिद्ध उपन्यासकार चंद्रकांता ने अपने उपन्यास 'कथा सतीसर' में घर छूटने और शरणार्थियों की पीड़ाओं को उजागर किया है । मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यास 'शिगाफ' में विस्थापन का दर्द , सांस्कृतिक व सामाजिक विरासत के छूट जाने की विडम्बना का दर्द है। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार क्षमा कौल अपने उपन्यास 'दर्दपुर' में मजहबी दहशतगर्दी के जुल्मोंसितम के शिकार कश्मीरी पंडितों के पलायन, संत्रास, शरणार्थी शिवरों की यातना, चिंता, आशा, मानवता और राष्ट्रीय भावनाओं को रेखांकित किया है । संजना कौल के उपन्यास 'पाषाण युग' उपन्यास में कश्मीर समस्या तथा वहां की राजनीतिक दुरुपयोग को विश्लेषित करने की सफल कोशिश मिलती है । जयश्री राय के उपन्यास 'इकबाल' के केंद्र में प्रेम और राष्ट्र की कश्मकश से उत्पन्न अंतर्द्वंद है। इस उपन्यास में प्रेम, वेदना, विस्थापन का दर्द और आतंक की त्रासदी सब समान रूप से उपस्थित हैं|

मधु कांकरिया ने ‘सूखते चिनार’ उपन्यास में कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद के मूल में जो परिस्थितियांरही है एवं उनके घाटी पर प्रभावों को यथार्थ के धरातल पर उजागर किया हैं | इसीप्रकार सारिका कालरा ने कश्मीर घाटी में व्याप्त तमाम समस्याओं को अपने उपन्यास ‘तेरे शहर’ में वर्णित किया हैं | पद्मा सचदेव का ‘जम्मू जो कभी शहर था’ उपन्यास में कश्मीरी समाज की सांस्कृतिक,ऐतिहासिक एवं राजनीतिक विशिष्टताएयथार्थ के धरातल पर वर्णित के है |

ज्यों ज्यों समय बीतता जा रहा है कश्मीरी विस्थापितों के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही हैं । विभिन्न राजनीतिक दलों ने कश्मीरी विस्थापितों की समस्या को स्थानीय समस्या में परिवर्तित करके रखा है । कश्मीरी विस्थापितों तथा शरणार्थियों की समस्या राष्ट्रीय समस्या है। यह भारत के धर्मनिरपेक्ष चरित्र पर लगा बदनुमा दाग है । यह दाग जितनी जल्दी मिटें भारत का उतना ही जल्दी मंगल होगा । कश्मीर विस्थापितों की घर वापसी सभ्यता की वापसी कहलाएगी |

2. शोध विषय की परिकल्पनाए :-

प्रस्तुत शोध विषय हिंदी 'उपन्यास साहित्य में कश्मीर समस्या' कश्मीर में विभिन्न प्रकार की समस्याओं पर केंद्रित शोध रहेगा । जिसमें कश्मीर की विभिन्न ज्वलंत समस्याओं को चित्रित किया जाएगा। प्रस्तुत शोध विषय की परिकल्पनाएं निम्नलिखित है -

1. प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में कश्मीर की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया जाएगा तथा समग्रत: अध्ययन किया जाएगा।

2. कश्मीर समस्या स्वयं में कई ज्वलंत मुद्दों को समाहित किए हुए हैं, इसमें विस्थापित होने के फलस्वरुप शरणार्थियों के जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं के मूल कारणों की जांच-पड़ताल करने का प्रयास किया जाएगा।

3. प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में 1990 के बाद से कश्मीर घाटी में लगातार पनप रहे अलगाववाद एवं उसके परिणामों को जानने का प्रयास किया जाएगा ।

4. कश्मीर घाटी में हिंसक अलगाववादी गतिविधियों के कारण प्रभावित आम जनता की समस्याओं को हिंदी उपन्यासों के माध्यम से समझने का प्रयास भी प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से किया जाएगा।

5.प्रस्तुत शोध विषय में अपनी जड़ों से कटकर नई जीवन भूमि पर स्थापित होते व्यक्ति के समक्ष उत्पन्न अस्मिता व समायोजना के संकट को आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया जाएगा ।

6. प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में कश्मीर घाटी से विस्थापितों की वास्तविक स्थिति को जानने का प्रयास किया जाएगा।

7. प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में कश्मीर की विभिन्न समस्याएं यथा शिक्षा की समस्या, स्त्री अस्मिता की समस्या, रोजगार की समस्या, आतंकवाद की समस्या आदि समस्याओं को जानने का प्रयास किया जाएगा।

8. प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में कश्मीर की धार्मिक भेदभाव एवं संप्रदायिकता की समस्या को वास्तविक स्थिति में प्रदर्शित करने का प्रयास किया जाएगा।

9. प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी उपन्यासों में कश्मीर की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

3. शोध की उपादेयता :-

मानव द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का कुछ न कुछ उद्देश्य आवश्यक होता है। शोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए तो उद्देश्यों का निर्धारण ही उसकी दिशा और दशा तय करता है । प्रस्तुत शोध विषय 'हिंदी उपन्यास साहित्य में कश्मीर समस्या' वर्तमान परिदृश्य पर एक ज्वलंत मुद्दा है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य होंगे-

1. प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कश्मीर घाटी से विस्थापितों की समस्या एवं समाधान के प्रति लोगों की मनोवृत्ति को जानना होगा।

2. इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विस्थापन के दंश में जीवन निर्वाह कर रहे लोगों की मानसिक दशा को व्यक्त करना होगा।

3. प्रस्तुत शोध का एक उद्देश्य घाटी में पनप रहे अलगाववादी आंदोलनों की तह में जाकर इस समस्या का समाधान ज्ञात करना होगा।

4. इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य घाटी में व्याप्त अशांति एवं हिंसा के कारण सामान्य जनजीवन को प्रभावित करने वाली मुख्य समस्याओं को समझना होगा।

5. प्रस्तुत शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य कश्मीर घाटी के प्रति हिंदी लेखकों के नजरिया को भी जानना होगा।

6. इस शोध का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य कश्मीर घाटी में शांति बहाली के प्रयासों की भी पहचान करना होगा ताकि भविष्य में कश्मीर घाटी को हिंसा की आग से बचकर अमन व शांति कायम की जा सके।

7. प्रस्तुत शोध का उद्देश्य कश्मीर घाटी में विभिन्न समस्याओं के निदान के लिए लोगों को जागरूक करना होगा।

4. शोध विषय का केंद्रीय विषय :-

वस्तुतः आज साहित्यकार कश्मीर समस्या को साहित्य की विभिन्न विधाओं में केंद्रीय विषय मानकर रचनाएं कर रहे हैं। वर्तमान समय में कश्मीर की समस्या एक ज्वलंत वैश्विक समस्या है।

प्रस्तुत शोध 'हिंदी उपन्यास साहित्य में कश्मीर समस्या' में कश्मीर की समस्या को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न पक्षों के माध्यम से उकेरा गया है।

कश्मीर में विस्थापन, अलगाववाद, आतंकवाद, स्त्री अस्मिता आदि समस्याओं के आरंभ से लेकर अब तक के उनके जीवन के संघर्षों, सांस्कृतिक परिवर्तनों तथा उनके दूसरे स्थान पर समायोजन न कर पाने, अपने देश में ही शरणार्थियों का जीवनयापन करने का दंश तथा उनके प्रति उत्पन्न संवेदना को उपन्यासों के माध्यम से आधार स्वरूप ग्रहण किया गया है।

इस शोध प्रबंध की केंद्रीय विषय वस्तु कश्मीर समस्या पर केंद्रित अब तक प्रकाशित उपन्यासों को बनाया गया है जो निम्नलिखित है -

क्रम संख्या	उपन्यास का नाम	लेखक का नाम
1.	कथा सतीसर -	चंद्रकांता
2.	कश्मीर की बेटी -	शत्रुघ्न
3.	दर्दपुर -	क्षमा कौल
4.	तेरे शहर में -	सारिका कालरा

5. पाषाण युग- संजना कौल

6. शिगाफ - मनीषा कुलश्रेष्ठ

7. सूखते चिनार - मधु कांकरिया

8. इकबाल - जयश्री राय

9. ऐलानगली जिंदा है - चंद्रकांता

10. जम्मू जो कभी शहर था- पद्मा सचदेव

11. कश्मीर 370 किलोमीटर- रविंद्र प्रभात

5. शोध की वर्तमान स्थिति :-

कश्मीर समस्या भारत के लिए निरंतर नासूर की तरह बढ़ती जा रही है। यथाशीघ्र ही इसके समाधान का प्रयास किया जाना आवश्यक है। कश्मीर समस्या पर आधारित यह शोध विषय कश्मीर समस्या के वास्तविक कारणों को जानने का एक प्रयास है। शोधार्थी को उपलब्ध स्रोतों से इस विषय पर किसी भी प्रकार के शोध कार्य होने की जानकारी नहीं मिली है। अतः विभिन्न ज्वलंत मुद्दों को स्वयं में संभावित किए हुए यह शोध विषय 'हिंदी उपन्यास साहित्य में कश्मीर समस्या' एक मौलिक एवं नवीन विषय है। जोकि कई प्रकार की नई संभावनाओं को लिए हुए हैं जो कश्मीर में शांति बहाली के प्रयासों को समझने की दिशा में एक प्रयास साबित हो सकेगा। इस शोध के माध्यम से नवीन स्थापनाएं एवं तथ्य प्रकाश में आ सकेंगे।

जहां तक विषय वस्तु का प्रश्न है तो शोध शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें कश्मीर समस्या पर आधारित उपन्यासों को आधारभूत सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाएगा।

6. शोध प्रविधि :-

शोध कार्य को उसकी परिणति तक पहुंचाने के लिए विभिन्न शोध प्रविधियों को आवश्यकता अनुसार प्रयोग किया जाएगा। इस शोध विषय के अंतर्गत कश्मीर की विभिन्न समस्याओं पर केंद्रित उपन्यासों में कश्मीर की समस्या के विविध पक्षों से संबंधित विषयों पर विश्लेषणात्मक पद्धति से अध्ययन किया जाएगा।

कश्मीर समस्याओं पर केंद्रित उपन्यासों में व्यक्त सांस्कृतिक द्वंद एवं संवेदना, स्त्री अस्मिता बोध, आतंकवाद अलगाववादी राजनीति, सांप्रदायिकता आदि को जांचने परखने की किसी एक अनुशासन से विश्लेषण करना उचित नहीं होगा। इसके फलस्वरुप विभिन्न अनुशासन पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। कश्मीर की समस्या की तह तक पहुंचाने के लिए साक्षात्कार एवं प्रश्नावली विधि का भी सहारा लिया जाएगा। इसके साथ ही शोध विषय को और अधिक विश्वसनीयता एवं मौलिकता प्रदान करने हेतु विवेचनात्मक, विचारात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धतियों का प्रयोग भी यथास्थान किया जाएगा। प्रस्तुत शोध विषय को प्रमाणिक बनाने के लिए विभिन्न ग्रंथों ,पत्र एवं पत्रिकाओं की भी सहायता ली जाएगी।

इस शोध के माध्यम से विभिन्न उपन्यासों में व्यक्त कश्मीर समस्या के विविध पक्षों यथा सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि सभी पक्षों का गहनता से विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

अतः विद्वतजनों से विनम्र निवेदन है कि इस शोध विषय की रूपरेखा को स्वीकार करने की कृपा करें। जिसमें शोधार्थी शोध अध्ययन के अथाह ज्ञान सागर में अपना बूंद रूपी अवदान कर सके।

7. प्रस्तावित शोध विषय का अध्यायीकरण :-

प्रथम अध्याय : कश्मीर : विरासत एवं वर्तमान परिदृश्य

(क) कश्मीर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
(ख) कश्मीर की राजनितिक पृष्ठभूमि
(ग) कश्मीर का सामाजिक जीवन
(घ) कश्मीर की अर्थव्यवस्था
(ङ) भारतीय उपमहाद्वीप में कश्मीर का मुद्दा

द्वितीय अध्याय : कश्मीर चित्रण के संदर्भ में हिंदी उपन्यासों का सर्वेक्षण

(क) चंद्रकांता के उपन्यास और कश्मीर
(ख) क्षमा कौल के उपन्यास और कश्मीर
(ग) संजना कौल के उपन्यास और कश्मीर
(घ) मनीषा कुलश्रेष्ठ के उपन्यास और कश्मीर
(ङ) पद्मा सचदेव के उपन्यास और कश्मीर
(च) जयश्रीराय के उपन्यास और कश्मीर
(छ) मधु कांकरिया के उपन्यास और कश्मीर
(ज) सारिका कालरा के उपन्यास और कश्मीर

(झ) शत्रुघ्न प्रसाद के उपन्यास और कश्मीर
(ञ) रवीन्द्र प्रभात के उपन्यास और कश्मीर

तृतीय अध्याय : हिंदी उपन्यासों में कश्मीरियत

(क) हिन्दू – मुस्लिम की सांझी विरासत
(ख) लोक जीवन
1. लोक साहित्य
2. लोक कथाए
3. भाषा व बोली
(ग) रीति-रिवाज, परम्पराए एवं विश्वाश
(घ) वेशभूषा एवं खान-पान
(ङ) प्राकृतिक सौन्दर्य

चतुर्थ अध्याय : हिंदी उपन्यासों में कश्मीर केन्द्रित राजनीति

(क) स्वतंत्रता पूर्व कश्मीर का राजनितिक परिदृश्य
(ख) स्वातंत्रोत्तर कश्मीर का राजनितिक परिदृश्य
(ग) अन्तरराष्ट्रीय राजनितिक परिदृश्य और कश्मीर

पंचम अध्याय : हिंदी उपन्यास : आतंकवाद और राष्ट्रीय एकता

(क) आतंकवाद : अर्थ और स्वरूप
(ख) आतंकवाद और साम्प्रदायिकता
(ग) आतंकवाद और राजनीति
(घ) आतंकवाद और पड़ोसी राज्य
(ङ) कश्मीरी जनजीवन पर आतंकवाद का प्रभाव
1. मुस्लिम समाज पर आतंकवाद का प्रभाव
2. हिन्दू धर्मावलम्बियों पर आतंकवाद का प्रभाव
3. आतंकवाद और स्त्री की स्थिति
4. आतंकवादियों का समर्पण और पुनर्वास

षष्ठम अध्याय : हिंदी उपन्यास : विस्थापन की समस्या

(क) विस्थापन : अर्थ एवं उत्तरदायी कारण
(ख) कश्मीरी पंडितों के विस्थापन की समस्या : विविध आयाम
1. घर छूटने की पीड़ा

2. शरणार्थीशिविरों में उपलब्ध न्यूनतम सुविधाए
3. कश्मीरी अस्मिता के लिए संघर्ष
4. आर्थिक आधार के लिए संघर्ष
5. वादी में लोटने की तड़प
6. विस्थापन और स्त्री

सप्तम अध्याय : कश्मीर समस्या पर लिखे हिंदी उपन्यासों का कला पक्ष

(क) कश्मीर जीवन और हिंदी उपन्यास का शिल्पगत वैशिष्टय

(ख) कथा वस्तु की विशेषताए

1. पात्र योजना
2. भाषा शैली
3. रचना धर्मिता का उद्देश्य

अष्टम अध्याय : उपसंहार : महत्त्व और मूल्यांकन

- संदर्भ ग्रन्थ सूची
- परिशिष्ट
- साक्षात्कार
- प्रश्नावली

8. ग्रन्थ सूची :-

(क) आधार ग्रंथ :-

1. कथा सतीसर : चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2016
2. ऐलान गली जिंदा है : चंद्रकांता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2015
3. दर्दपुर : क्षमता कौल, ज्योतिपर्व प्रकाशन गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2014
4. पाषाण युग : संजना कौल, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला, हरियाणा, प्रथम संस्करण 2003
5. शिगाफ : मनीषा कुलश्रेष्ठ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम पेपरबैक संस्करण 2014

6. जम्मू जो कभी शहर था : पद्मा सचदेव, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2012
7. इकबाल : जयश्रीराय, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकूला, हरियाणा, प्रथम संस्करण 2014
8. सूखते चिनार : मधु कांकरिया , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012
9. कश्मीर की बेटी : शत्रुघ्न प्रसाद, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019
10. तेरे शहर में : सारिका कालरा, हिंदी युग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017
11. कश्मीर 370 किलोमीटर : रवीन्द्र प्रभात

(ख) सहायक ग्रंथ :-

1. दिलोदानिश संवेदना और शिल्प : डॉ. सविता, मनीषा प्रकाशन गाजियाबाद, संस्करण 2003
2. समकालीनता और साहित्य : राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली
3. साहित्य में सर्जन के आयाम और विज्ञानवादी दृष्टि : राजेंद्र कुमार
4. संवेदना और शिल्प : रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. विस्थापन विकास और वीरेंद्र जैन के उपन्यास : डॉ. देव कुमार, डॉ. संजय कुमार लक्की, यात्री प्रकाशन संस्करण 2010
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और मूल्य संक्रमण : कमलापति त्रिपाठी, प्रशासन संस्थान शाहदरा, संस्करण 1980
7. भूमंडलीकरण की चुनौतियां : सच्चिदानंद सिन्हा, वाराणसी प्रकाशन नई दिल्ली
8. आदिवासी: विकास से विस्थापन, रमणिका गुप्ता, नेहा प्रकाशन, संस्करण 2015

9. जम्मू-कश्मीर की अनकही कहानी : कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
10. जम्मू कश्मीर के जननायक महाराजा हरिसिंह : कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
11. कश्मीर एवं हैदराबाद : संपादक, पी.एन. चोपड़ा, प्रभा चोपड़ा
12. कश्मीर : समस्या और विश्लेषण : जगमोहन, राजपाल एंड संस प्रकाशन, कश्मीरी गेट नई दिल्ली
13. आर. एस. पंडित का अनुवाद : राजतरंगिनी (कल्हण) , साहित्य अकादमी, दिल्ली, तरंग 15 , श्लोक 71-72
14. हिंदी साहित्य में युगबोध : सं. शैलजा भारद्वाज , चिंतन प्रकाशन, कानपुर
15. हिंदी उपन्यास की प्रवृतियां : शशिभूषण सिंघल, प्रकाशन – विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, प्रथम संस्करण 1973
16. बाणभट्ट की आत्मकथा : हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
17. कश्मीर और कश्मीर पंडित : अशोक कुमार पांडेय , राजकमल पेपर बेक्सप्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण
18. भारत के विभाजन की कहानी : ए. के. कैम्पबेल
19. कश्मीर समाज विस्थापन और समस्याएं : भारत के विभाजन की कहानी : ए. के. कैम्पबेल
20. मधु कांकरिया के कथा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संवेदना : डॉ. शबाना हबीब, अमन प्रकाशन कानपुर

(ग) शब्दकोश :-

1. डॉ. हरदेव बाहरी: हिंदी शब्दकोश, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सन् 2010
2. हिंदी अंग्रेजी शब्दकोश : डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल प्रकाशन
3. आदर्श हिंदी शब्दकोश : डॉ रामविलास गुप्ता, कमल प्रकाशन
4. डॉ धीरेंद्र वर्मा: हिंदी साहित्य कोश (पारिभाषिक शब्दावली) ज्ञानमंडल वाराणसी, सन् 2000

5. हिंदी मुहावरा कोश : डॉ भोलानाथ तिवारी

(घ) समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं :-

1. हंस : दिल्ली
2. तद्भव : लखनऊ
3. मधुमति : उदयपुर
4. आलोचना : दिल्ली
5. कथादेश :दिलशाद गार्डन, दिल्ली
6. समकालीन भारतीय साहित्य : दिल्ली
7. उमर उजाला : मेरठ
8. नवभारत टाइम्स : नई दिल्ली
9. जनसत्ता : नई दिल्ली
10. ऑनलाइन पत्रिकाएं : लहर, अभिव्यक्ति, अपनी माटी।

(ङ) लेख :-

1. कश्मीर की त्रासदी और हिंदी साहित्य
2. घाटी से निष्काशित हिंदुओं की वेदना
3. विस्थापन अभाव और विकास प्रक्रिया
4. विस्थापन तथा अभाव
5. पलायन आपदा और संघर्ष नतीजे में आंतरिक विस्थापन ।